गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 276
दि. 07.02.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

विश्व विजेता भारत, हरारे में लहराया तिरंगा

अंडर-19 विश्व कप पर छठी बार कब्ज़ा

(जीएनएस)। हरारे। भारतीय क्रिकेट ने एक बार फिर दुनिया को अपनी अपार प्रतिभा और मजबूत सिस्टम का लोहा मनवा दिया है। भारत ने अंडर-19 विश्व कप के फाइनल में इंग्लैंड को 100 रन से करारी शिकस्त देकर रिकॉर्ड छठी बार खिताब अपने नाम कर लिया। इस ऐतिहासिक जीत के साथ ही टीम इंडिया ने यह साबित कर दिया कि भविष्य का भारतीय क्रिकेट कितने सुरक्षित और मजबूत हाथों में है। हरारे के मैदान पर खेले गए इस फाइनल मुकाबले में भारत ने न सिर्फ जीत दर्ज की, बल्कि रिकॉर्ड्स की ऐसी झड़ी लगा दी, जो लंबे समय तक याद रखी जाएगी।

टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम ने इंग्लैंड के सामने रनों का पहाड़ खड़ा कर दिया। भारत ने निर्धारित ओवरों में 411 से अधिक रन बनाकर अंडर-19 विश्व कप और इसके फाइनल मुकाबलों का सबसे बड़ा स्कोर दर्ज किया। इस विस्फोटक बल्लेबाजी के केंद्र में रहे वैभव सूर्यवंशी, जिन्होंने फाइनल को अपनी ऐतिहासिक पारी से पूरी तरह यादगार बना दिया। वैभव ने मात्र 80 गेंदों में 175 रन ठोक दिए, जिसमें 15 चौके और 15 छक्के शामिल रहे। उनकी यह पारी न केवल फाइनल की सर्वश्रेष्ठ पारियों में शुमार हो गई, बल्कि अंडर-19 क्रिकेट के इतिहास में भी मील का पत्थर बन गई।

वैभव सूर्यवंशी ने शुरुआत से ही इंग्लैंड के गेंदबाजों पर आक्रमण कर दिया और मैदान के हर कोने में शॉट्स लगाए। उन्होंने सिर्फ 55 गेंदों में शतक पूरा कर लिया और उसके बाद रफ्तार और तेज कर दी। कप्तान आयुष म्हात्रे ने भी जिम्मेदारी निभाते हुए 53 रनों की अहम पारी खेली और वैभव के साथ 142 रनों की मजबूत साझेदारी कर टीम को ठोस आधार दिया। मध्यक्रम में अभिज्ञान कुंडू और कनिष्क चौहान ने भी उपयोगी योगदान दिया, जिससे भारत विशाल स्कोर तक पहुंचने में सफल रहा। इंग्लैंड की ओर से जेम्स मिंटो ने तीन विकेट जरूर लिए, लेकिन भारतीय बल्लेबाजों के सामने उनकी कोशिशें नाकाफी साबित हुईं। 412 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड की टीम शुरुआत से ही दबाव में नजर आई। भारतीय गेंदबाजों ने सधी हुई और आक्रामक गेंदबाजी करते हुए इंग्लैंड को खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया। हालांकि बेन डॉकिंस और बेन मायेस ने पारी को संभालने की कोशिश की, लेकिन नियमित अंतराल पर गिरते विकेटों ने इंग्लैंड की उम्मीदों को झकझोर दिया। निचले क्रम में कैलब फाल्कनर ने जबरदस्त जुझारूपन दिखाते हुए 67 गेंदों में 115 रन की शानदार पारी खेली, लेकिन उनका यह शतक भी इंग्लैंड को हार से नहीं बचा सका।

भारतीय गेंदबाजी इकाई ने सामूहिक प्रदर्शन करते हुए इंग्लैंड को 40.2 ओवर में 311 रन पर समेट दिया। आरएस अंबरीश ने तीन विकेट झटके, जबकि दीपेश देवेंद्रन और कनिष्क चौहान ने दो-दो विकेट लेकर विपक्षी टीम की कमर तोड़ दी। जैसे ही आखिरी विकेट गिरा, मैदान पर भारतीय खिलाड़ियों की खुशी देखते ही बन रही थी। डगआउट में बैठे कोचिंग स्टाफ से लेकर दर्शक दीर्घा में मौजूद भारतीय समर्थकों तक, हर कोई इस ऐतिहासिक पल का साक्षी बनना चाहता था।

यह जीत सिर्फ एक ट्रॉफी तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय क्रिकेट की निरंतर सफलता की कहानी को और मजबूत करती है। भारत इससे पहले 2000 में मोहम्मद कैफ की कप्तानी में, 2008 में विराट कोहली के नेतृत्व में, 2012 में उनमुक्त चंद, 2018 में पृथ्वी शॉ और 2022 में यश ढुल की कप्तानी में अंडर-19 विश्व कप जीत चुका है। अब 2026 में आयुष म्हात्रे इस गौरवशाली सूची में शामिल हो गए हैं, जिन्होंने अपनी कप्तानी में भारत को छठा खिताब दिलाया।

इस फाइनल में भारत ने कई बड़े रिकॉर्ड अपने नाम किए। 100 रन से जीत अंडर-19 विश्व कप फाइनल में अब तक की सबसे बड़ी जीत बन गई। 411 से अधिक रनों का स्कोर टूर्नामेंट और फाइनल दोनों का सर्वोच्च स्कोर रहा। भारत अंडर-19 विश्व कप के प्लेऑफ मुकाबले में 350 से ज्यादा रन बनाने वाली पहली टीम बनी और यह भारत का टूर्नामेंट इतिहास में तीसरा 400+ स्कोर भी रहा, जो किसी और टीम के लिए अब तक सपना ही बना हुआ है।

हरारे की इस ऐतिहासिक रात ने यह साफ कर दिया कि भारतीय क्रिकेट की जड़ें कितनी गहरी हैं। वैभव सूर्यवंशी जैसे युवा सितारे भविष्य के बड़े मंच के लिए तैयार नजर आ रहे हैं, जबकि टीम इंडिया का अंडर-19 ढांचा लगातार विश्व स्तर पर अपनी श्रेष्ठता साबित कर रहा है। छठी बार विश्व विजेता बनकर भारत ने यह संदेश दे दिया है कि क्रिकेट की दुनिया में उसका दबदबा अभी लंबे समय तक कायम रहने वाला है।

दस वर्षों में बदली रेलवे की तस्वीर, घाटे से उबरकर बचत की ओर बढ़ी भारतीय रेल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। संसद के बजट सत्र में भारतीय रेलवे की वित्तीय सेहत को लेकर हुई चर्चा में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने विस्तार से बताया कि बीते एक दशक में रेलवे की स्थिति में बड़ा और सकारात्मक बदलाव आया है। उन्होंने कहा कि कभी भारी घाटे और दबाव में रहने वाली भारतीय रेल आज अपने खर्च स्वयं वहन करने की स्थिति में पहुंच गई है और कुछ हद तक बचत भी करने लगी है। हालांकि, इसके साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यात्री सेवाओं पर रेलवे को अब भी सालाना करीब 60 हजार करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ता है, क्योंकि किराये को जानबूझकर कम रखा गया है।

राज्यसभा में भाजपा नेता डॉ. लक्ष्मीकांत बाजपेयी द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को किराये में दी जाने वाली रियायतों को फिर से बहाल करने के सवाल पर जवाब देते हुए रेल मंत्री ने कहा कि रेलवे पहले से ही यात्रियों को बड़ी अप्रत्यक्ष सब्सिडी दे रही है। उन्होंने आंकड़ों के साथ बताया कि यात्री सेवाओं पर रेलवे जो भी 100 रुपये खर्च करती है, उसके बदले उसे किराये से केवल 55 रुपये ही मिल पाते हैं। शेष 45 रुपये सरकार द्वारा वहन किए जाते हैं, जो कि सभी वर्गों के यात्रियों के लिए औसतन 45 प्रतिशत की छूट के बराबर है। ऐसे में रेलवे पहले से ही भारी आर्थिक बोझ उठा रही है।

वरिष्ठ नागरिकों की रियायतों को लेकर सीधा आश्वासन देने से बचते हुए अश्विनी वैष्णव ने रेलवे के व्यापक वित्तीय सुधारों पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पिछले दस वर्षों में रेलवे की परिचालन लागत को नियंत्रित किया गया है और राजस्व बढ़ाने के लिए संरचनात्मक सुधार किए गए हैं। इसके चलते रेलवे अब अपने दैनिक खर्चों को पूरा करने के साथ-साथ सीमित बचत की स्थिति में भी आई है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत में आज यात्रियों को पड़ोसी देशों की तुलना में कम किराये पर आधुनिक सुविधाओं वाली वंदे भारत और अमृत भारत जैसी ट्रेनें उपलब्ध कराई जा रही हैं, जो रेलवे के सेवा स्तर में बड़े बदलाव का संकेत है।

रेल मंत्री ने रेलवे की वित्तीय मजबूती का बड़ा कारण देशभर में रेल लाइनों का तीव्र विद्युतीकरण बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के दूरदर्शी निर्णय के चलते रेलवे ने डीजल पर निर्भरता कम की है, जिससे सालाना लगभग 5,500 करोड़ रुपये की सीधी बचत हो रही है। पहले जहां रेलवे का ईंधन खर्च 37,841 करोड़ रुपये था, वह अब घटकर 32,400 करोड़ रुपये रह गया है। विद्युतीकरण से न केवल लागत घटी है, बल्कि आयातित डीजल पर निर्भरता कम होने से देश की ऊर्जा सुरक्षा भी मजबूत हुई है। इसके साथ ही कार्बन उत्सर्जन में करीब 95 प्रतिशत तक की कमी आई है, जो पर्यावरण के लिहाज से भी बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

माल ढुलाई को रेलवे की कमाई का मजबूत स्तंभ बताते हुए अश्विनी वैष्णव ने कहा कि इस क्षेत्र में बीते वर्षों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। रेलवे ने माल ढुलाई में करीब 40 करोड़ टन की अतिरिक्त वृद्धि दर्ज की है, जिससे राजस्व में बड़ा इजाफा हुआ है। उन्होंने कहा कि माल ढुलाई को प्राथमिकता देने और लॉजिस्टिक्स को बेहतर बनाने से रेलवे की आय में स्थायित्व आया है और यात्री सेवाओं पर होने वाले घाटे की भरपाई में मदद मिली है।

रोजगार के मुद्दे पर बोलते हुए रेल मंत्री ने कहा कि रेलवे देश का सबसे बड़ा नियोक्ता बना हुआ है। वर्ष 2014 से 2024 के बीच रेलवे में 5.04 लाख नई नौकरियां दी गई हैं। उन्होंने बताया कि सरकार के वर्तमान तीसरे कार्यकाल में भी 1.5 लाख अतिरिक्त रोजगार सृजित करने की प्रक्रिया जारी है। सहायक लोको पायलट के 18 हजार पदों पर भर्ती प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और चयनित अभ्यर्थी कार्यभार संभाल चुके हैं। यह कदम न केवल रेलवे के परिचालन को मजबूत करता है, बल्कि युवाओं को रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है।

रेलवे के ऊंचे परिचालन अनुपात को लेकर उठे सवालों पर भी अश्विनी वैष्णव ने स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने बताया कि रेलवे का कुल परिचालन व्यय करीब 2.75 लाख करोड़ रुपये है। इसमें से 1.18 लाख करोड़ रुपये कर्मचारियों के वेतन पर और लगभग 65 हजार करोड़ रुपये पेंशन पर खर्च होते हैं। वर्तमान में रेलवे में करीब 12 लाख सक्रिय कर्मचारी कार्यरत हैं, जबकि 18 लाख से अधिक सेवानिवृत्त पेंशनधारकों की जिम्मेदारी भी रेलवे पर ही है। इतने बड़े मानव संसाधन और सामाजिक दायित्वों के बावजूद रेलवे अपने वित्तीय संतुलन को बनाए रखने में सफल रही है।

रेल मंत्री ने यह भी रेखांकित किया कि पूर्वोत्तर राज्यों में रेलवे के विस्तार और विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। यूपीए सरकार के समय जहां पूर्वोत्तर के लिए रेल बजट करीब 2,000 करोड़ रुपये था, वहीं अब इसे बढ़ाकर 11,486 करोड़ रुपये कर दिया गया है। इससे न केवल क्षेत्रीय संपर्क बेहतर हुआ है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार को भी बढ़ावा मिला है।

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

यात्राधाम अंबाजी में अंबाजी कॉरिडोर प्रोजेक्ट के

प्रथम चरण के ₹950 करोड़ के विकास कार्यों का शिलान्यास समारोह

गुजरात पवित्र यात्राधाम विकास बोर्ड
गुजरात सरकार

माननीय मुख्यमंत्री
श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
के करकमलों द्वारा

07 फ़रवरी, 2026 सुबह 11.00 बजे
अंबाजी, ता. दांता, जिला: बनासकांठा

प्रथम चरण के अंतर्गत होने वाले विकास कार्य

- मल्टीलेवल पार्किंग
- अंडरपास रोड
- पाथवे
- दिव्य दर्शन चौक
- शक्तिपथ
- टूरिस्ट एमेनिटीज
- शक्ति कॉरिडोर
- सती घाट
- गब्बर प्लाजा
- यात्री निवास एवं अन्य संबंधित सुविधाएं

"अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित अंबाजी कॉरिडोर, अंबाजी शक्तिपीठ की भव्यता और गरिमा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाते हुए श्रद्धालुओं की यात्रा को सुखद, सुगम और अविस्मरणीय बनाएगा।"—**श्री हर्ष संघवी,** माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

"विकास भी, विरासत भी" के दृढ़ संकल्प को साकार करने की दिशा में अग्रसर गुजरात

संपादकीय

खनन पर हो मनन

सत्ताधीशों की इच्छा शक्ति की कमी और प्रवर्तन एजेंसियों की लापरवाही से खनन माफिया के हौसल बुलंद हैं। कहीं न कहीं नागरिकों की उदासीनता भी इसके मूल में हैं। पंजाब के रोपड़ जिले की शिवालिक पहाड़ियों में हो रही तबाही उस भयावह स्थिति को दर्शाती है, जिसका खमियाजा आने वाली पीढ़ियों को भी भुगतना पड़ेगा। वजह साफ है कि अंधाधुंध खनन से शिवालिक पहाड़ियों के पारिस्थितिकीय तंत्र को भारी क्षति पहुंच रही है। जो हमें यह भी बताता है कि नीति और प्रवर्तन के बीच खाई में पर्यावरणीय अपराध कैसे और किस तेजी से पनपते हैं। प्रशासन की नाक के नीचे खुदाई करने वाली भारी मशीनों का खुलेआम प्रयोग अवैध खनन हेतु किया जा रहा है। इस पारिस्थितिक रूप से नाजुक क्षेत्र की पूरी पहाड़ियों को समतल किया जा रहा है। जो हमारे पर्यावरण के लिये एक गंभीर चुनौती है। यह क्षति शिवालिक पहाड़ियों के मूल पारिस्थितिक कार्यों मसलन भूजल पुनर्भरण, मृदा-स्थिरता और जैव-विविधता संरक्षण जैसे जीवन रक्षक लक्ष्यों को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। दरअसल, यह शिवालिक पर्वतमाला भू-संरचना की दृष्टि से नयी बनी हुई है और स्वाभाविक रूप से अस्थिर है। निर्विवाद रूप से किसी भी स्थान पर होने वाली अनियंत्रित खुदाई से भूमि का कटाव बहुत तेजी से होता है। जिसके चलते वर्षा ऋतु और उसके बाद भूस्खलन की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ती है। वहीं इन क्षेत्रों में गाद जमाव का संकट भी गहरा जाता है। कालांतर इसके चलते जल निकासी के पैटर्न में अप्रत्याशित बदलाव देखने में आता है। यह सर्वविदित है कि एक बार इन पहाड़ियों को अवैध रूप से काटकर समतल कर दिया जाता है तो उसके मूल स्वरूप को फिर प्राप्त कर पाना लगभग असंभव है। दूसरे शब्दों में कहें उस क्षेत्र विशेष का प्राकृतिक संरक्षण कवच हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है। ऐसे में प्राकृतिक सुरक्षा को नष्ट करने वाला विकास कालांतर आपदा का कारक बन सकता है। दरअसल, यह ऐसा प्राकृतिक सुरक्षा तंत्र होता है जो निचले मैदानी इलाकों को बाढ़ और जल संकट से बचाता है। यह विडंबना ही कही जाएगी कि इस बाबत जवाबदेह अधिकारियों द्वारा दलील दी जाती रही है कि इस क्षेत्र में खनन की प्रक्रिया पर्यावरण संबंधी स्वीकृतियों के आधार पर की जाती रही है। साथ ही यह भी सफाई दी जाती है कि ऐसी स्वीकृतियों का उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना लगाया जाता है। लेकिन हकीकत तब उजागर हो जाती है जब स्थानीय लोग रात के समय होने वाले खनन कार्यों, निर्धारित सीमा से अधिक और बड़े पैमाने पर पहाड़ी इलाकों में कटाई होने के आरोप लगाते हैं। ऐसे में अधिकारियों की तमाम दलीलें खोखली ही साबित होती हैं। दरअसल,सवाल नियम-कानूनों की प्रभावकारिता का नहीं है बल्कि असली दिक्कत प्रवर्तन एजेंसियों की उदासीनता की है। जो वस्तु-स्थिति से अवगत होने के बावजूद इन आपराधिक कृत्यों के प्रति आंखें मूंदे रहती हैं। दरअसल, खनन कार्यों से जुड़े ठेकेदारों को आपराधिक तत्वों व राजनेताओं का संरक्षण भी एक बड़ी चुनौती है। इसमें दो राय नहीं है कि जब अवैध खनन के खिलाफ जमीनी स्तर पर निगरानी के बजाय महज कागजी कार्रवाई का सहारा लिया जाता है तो अवैध खनन को संबल मिलता है। ऐसा भी नहीं है कि यह अवैध खनन केवल पंजाब की शिवालिक पहाड़ियों के आसपास ही हो रहा है। पूरे भारत में, पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील तमाम क्षेत्रों में अवैध खनन लगातार पर्यावरण से जुड़े कानूनों की सीमाओं का उल्लंघन करता नजर आता है। अकसर खनन के लिये दिए गए परमिटों में अस्पष्टता और स्थानीय स्तर पर कमजोर निगरानी का फायदा उठाया जाता है। वह भी तब जब सर्वोच्च न्यायालय और राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण के फैसलों में बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता रहा है कि आर्थिक गतिविधियां पारिस्थितिकीय नुकसान की कीमत पर नहीं चलायी जा सकती। फिर भी, जमीनी स्तर पर, प्रवर्तन एजेंसियां या तो शक्तिहीन दिखाई देती हैं या निर्णायक कार्रवाई करने की इच्छाशक्ति उनमें नजर नहीं आती। वास्तव में अवैध खनन पर सिर्फ जुर्माना लगाने के बजाय प्रतिबंधित क्षेत्रों का सख्त सीमांकन, प्रौद्योगिकी आधारित निगरानी तथा अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने की जरूरत है।

संसद की गरिमा को बचाने की ज़रूरत

> हाल ही में लोकसभा में हुए अभूतपूर्व हंगामे ने संसदीय मर्यादाओं को तार-तार कर दिया है, जहाँ प्रधानमंत्री को भी सदन को संबोधित करने से रोका गया, जो नेहरू-वाजपेयी द्वारा स्थापित संवाद की परंपरा के क्षरण और लोकतंत्र के लिए एक निराशाजनक संकेत है।

देश की संसद हमारे लोकतांत्रिक आचरण, संसदीय मर्यादाओं और संवाद की शुचिता का केंद्र होनी चाहिए। जहां संवाद से संकटों के हल खोजे जाएं। लेकिन पिछले दो दिनों में लोकसभा में जो हुआ,वह बहुत निराशाजनक है। सदन के नेता प्रधानमंत्री ही अगर अपने सदन को संबोधित न कर सकें, इससे ज्यादा निराश करने वाली बात क्या हो सकती है। ये हुआ , सबने देखा। यह संसदीय मर्यादाओं के तार-तार होने का भी समय है। जब लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को यह अपील करनी पड़ी कि प्रधानमंत्री लोकसभा में न आएं और राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई चर्चा का जवाब न दें। लोकसभा अध्यक्ष ने किस तरह की आशंकाओं के कारण ऐसा कहा होगा, इसे समझा जा सकता है। इसके पहले सदन में हुए हंगामे, कागज फाड़कर आसंदी पर फेंकने जैसे दृश्य तो संसद ने अनेक बार देखे हैं। बावजूद इसके एक अभूतपूर्व दृश्य भी लोकसभा ने देखा जब लगभग सात महिला सांसद प्रधानमंत्री के आसन तक जा पहुंचीं। क्या हो सकता था, इसका अनुमान लगाना ठीक नहीं। किंतु बाद में लोकसभा अध्यक्ष ने जो कुछ कहा वह बताता है, संसदीय मर्यादाओं की सीमाएं लांघते हुए हमारे सांसद दिखे। परंपरा रही है कि धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा का जवाब आमतौर पर प्रधानमंत्री देते हैं । इसकी न सिर्फ अपेक्षा रहती है बल्कि प्रतीक्षा भी आखिर सरकार के मुखिया क्या कहते हैं। स्थापित मान्यता यहां टूटती दिखी। प्रधानमंत्री लोकसभा को संबोधित नहीं कर सके। राज्यसभा में भी उनका भाषण विपक्ष की गैरमौजूदगी में हुआ। संसदीय लोकतंत्र में विरोध और संवाद साथ -साथ चलते हैं। प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संसद में पहले दिन से बहस और संवाद की संस्कृति को

संरक्षित किया। वे यह चाहते थे अच्छे लोग संसद में आएं और संसदीय बहसों का स्तर ऊंचा हो। अपने विरोधी सांसदों की भी वे प्रशंसा करते हुए नजर आते हैं।

दिग्गज सांसद राममनोहर लोहिया से लेकर युवा सांसद अटल बिहारी बाजपेई को भी उन्होंने ध्यान से सुना। यह परंपरा बाद के प्रधानमंत्रियों ने भी बनाए रखी। विपक्ष भी अपने आचरण में मर्यादित रहा। संसद हमारे लोकतांत्रिक स्वभाव का आईना बनी रही। आपातकाल लागू होने के बाद क्षरण जरूर हुआ किन्तु बाद के दिनों में सब कुछ संभल गया। नरसिंहराव, चंद्रशेखर, अटलजी स्वयं बड़े संसदविद् थे और सदन गरिमा के साथ चलता रहा। कड़ी आलोचना के साथ , संवाद कायम रहा। पिछले कुछ समय से संवाद बंद है और कटुता बहुत बढ़ गई है। संसद शब्द की हिंसा का केंद्र बन गयी है। अपने सहयोगी सांसद को गद्दार की संज्ञा देना जैसे उदाहरण किसी भी तरह स्वीकार्य नहीं हैं। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए यह शुभ नहीं है। यह सही बात है कि सदन को चलाना सरकार की जिम्मेदारी है। लेकिन विपक्षी दलों के सहयोग के बिना सदन नहीं चल सकता यह भी सच है। सदन में मिले विशेषाधिकार का लाभ लेकर सांसदों द्वारा हमारे महान दिवंगत नेताओं को कोसना , उनके जीवन के निजी पक्षों को किताबों के संदर्भ देकर उठाना कितना उचित है? इसके साथ ही बिना तथ्यों के किसी अनछपी किताब के उदाहरण से सरकार को घेरने की कोशिश भी बचकानी ही है। बजट सत्र संसद का बहुत महत्व का सत्र होता है। जिसमें हम अपने देश के आगामी एक साल के सपनों, आकांक्षाओं, आर्थिक भविष्य का खाका खींचते हैं। ऐसे सत्र का समय नष्ट करके हमें क्या हासिल होगा, समझना मुश्किल है। मुद्दे की बात यह भी है कि क्या हमारे सांसद स्वस्थ बहस चाहते हैं? क्या क्षणिक राजनीतिक सुर्खियों के लिए हम समाज के वृहत्तर प्रश्नों की उपेक्षा नहीं कर रहे हैं। दिवंगत नेताओं की चरित्रावली का वाचन करके हम कौन से मूल्य स्थापित कर रहे हैं? कभी नेता प्रतिपक्ष ने वीर सावरकर पर सवाल खड़े करके जो गलत परंपरा डाली , अब दूसरे सांसद बोरे में किताबें लाकर उनके अंश पढ़ रहे हैं। इससे हमें क्या हासिल होगा? नेहरू जी, श्रीमती इंदिरा गांधी, अटल जी इस देश के महान नेता रहे हैं, उनके देहावसान के बाद ऐसी गलीज बातें राजनीतिक कार्यकर्ताओं को नहीं करनी चाहिए। मृत्यु के बाद हम पुरखों के सद्गुण याद करते हैं। उनके प्रदेय और योगदान पर गर्व करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं। किंतु हम किस रास्ते पर चल पड़े हैं? आजादी के इतने सालों बाद संसदीय बहस और संसदीय मर्यादाओं का स्तर ऊंचा करने के बजाय हम इसे रसातल में ले जा रहे हैं। कितना अच्छा होता कि हमारे सांसद यह समझ पाते कि देश की जनता ने उन्हें किन उम्मीदों से संसद में भेजा है। अगर सांसद ही तय लेंगे कि संसद नहीं चलेगी, तो उसे कौन चला सकता है। सांसद होना साधारण नहीं है, देश के 1 अरब, 40 करोड़ लोगों की आकांक्षाओं के प्रतिनिधियों का आचरण प्रश्नचिन्ह की तरह हमारे सामने है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सभी राजनीतिक दल ऐसे निराशाजनक दृश्यों से संसद को बचाने के लिए सोचेंगे। संसदीय राजनीति का यह पतन देखकर सबसे दुखी शायद पं.जवाहरलाल नेहरू और श्री अटल बिहारी वाजपेयी ही होते। दुर्भाग्यवश इन दोनों के राजनीतिक उत्तराधिकारी ही इन दृश्यों के लिए जिम्मेदार हैं। बाकी से क्या उम्मीद करना ?

प्रेरणा

लेखनी की सीमा नहीं होती

साहित्य केवल शब्दों का खेल नहीं होता, न ही वह किसी एक देश, भाषा या भूगोल की चारदीवारी में कैद किया जा सकता है। सच्चा साहित्य वह होता है जो मनुष्य के दुःख-सुख से जुड़ता है, उसकी पीड़ा को स्वर देता है और उसके संघर्ष को अर्थ प्रदान करता है। ऐसे ही साहित्यकार होते हैं, जो सीमाओं से परे जाकर पूरी मानवता के अपने बन जाते हैं। रूसी उपन्यासकार मैक्सिम गोर्की इसी श्रेणी के लेखक थे, जिनकी लेखनी का सरोकार सत्ता या सुविधा से नहीं, बल्कि आम आदमी, श्रमिक और सर्वहारा वर्ग के जीवन से था। उनके उपन्यास 'मां' ने केवल रूस में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में शोषित वर्ग की चेतना को आवाज़ दी। यही कारण था कि गोर्की केवल रूस के लेखक नहीं रहे, बल्कि विश्व साहित्य की साझा धरोहर बन गए।

भारत में हिंदी साहित्य के महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद गोर्की को अपना आदर्श मानते थे। प्रेमचंद स्वयं भी किसानों, मजदूरों, दलितों और स्त्रियों के जीवन-संघर्ष को अपनी कहानियों और उपन्यासों का केंद्र बनाते रहे। 'गोदान', 'कर्मभूमि', 'रंगभूमि' जैसे उपन्यासों में उन्होंने भारतीय समाज के शोषित वर्ग की व्यथा को उसी सच्चाई और संवेदनशीलता से उकेरा, जैसी गोर्की ने रूस के श्रमिक वर्ग के लिए की थी। दोनों लेखकों की सामाजिक परिस्थितियाँ भिन्न थीं, पर उनकी वैचारिक जमीन एक थी—मानवीय मूल्यों की रक्षा और अन्याय के विरुद्ध कलम का प्रयोग।

जून 1936 में जब मैक्सिम गोर्की का निधन हुआ, उस समय प्रेमचंद स्वयं गंभीर रूप से तपेदिक जैसी बीमारी से जूझ रहे थे। शरीर दुर्बल था, साँसें थकी हुई थीं, लेकिन मन और चेतना पूरी तरह सजग थी। गोर्की के निधन का समाचार जैसे ही उन्हें मिला, वे भीतर तक विचलित हो उठे। यह केवल किसी प्रसिद्ध लेखक के निधन का दुःख नहीं था, बल्कि एक वैचारिक साथी, एक प्रेरणास्रोत के चले जाने की पीड़ा थी। उसी रात, बीमारी और कमजोरी के बावजूद, प्रेमचंद पूरी रात जागते रहे और गोर्की के सम्मान में एक शोक-प्रस्ताव लिखा। यह प्रस्ताव एक शोक-सभा में पढ़ा जाना था, लेकिन उससे भी अधिक वह प्रेमचंद के भीतर की कृतज्ञता और वैचारिक जुड़ाव की अभिव्यक्ति था।

पत्नी शिवरानी देवी ने जब यह देखा कि प्रेमचंद अपनी बिगड़ती तबीयत की परवाह किए बिना रात भर लिखते रहे, तो स्वाभाविक चिंता के साथ उन्होंने कहा, "गोर्की तो हिंदुस्तान के नहीं थे, फिर इतना परेशान क्यों हो रहे हो?" यह प्रश्न सामान्य था, पर प्रेमचंद का उत्तर असाधारण था। उन्होंने कहा, "आम आदमी के सुख-दुख से सरोकार रखने वाले और उनके लिए लिखने वाले गोर्की सिर्फ रूस के ही नहीं, पूरी दुनिया के दुलारे थे। इस नाते यह तो बनता ही है कि हम 'अपने' गोर्की के लिए शोक-प्रस्ताव लिखें।" इस एक उत्तर में प्रेमचंद की पूरी साहित्यिक दृष्टि समाई हुई थी। उनके लिए 'अपना' और 'पराया' राष्ट्रीय सीमाओं से तय नहीं होता था, बल्कि विचारों और मानवीय सरोकारों से तय होता था। जो लेखक मनुष्य की पीड़ा को समझता है, उसके संघर्ष को शब्द देता है और अन्याय के विरुद्ध खड़ा होता है, वह किसी एक देश का नहीं, बल्कि पूरी मानवता का होता है। यही कारण है कि प्रेमचंद ने गोर्की को 'हमारा' कहा—क्योंकि गोर्की की चिंता भी वही थी, जो प्रेमचंद की थी।

यह प्रसंग हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि एक सृजक के वास्तविक सरोकार क्या होते हैं। क्या वह केवल अपनी भाषा, अपने समाज या अपने देश तक सीमित होता है? या फिर उसकी संवेदना इतनी व्यापक होती है कि वह दुनिया के किसी भी कोने में हो रहे अन्याय और पीड़ा से जुड़ जाती है? प्रेमचंद और गोर्की जैसे लेखक इस प्रश्न का उत्तर अपने जीवन और लेखन से देते हैं। उनके लिए साहित्य सत्ता के निकट जाने का माध्यम नहीं था, बल्कि समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति के पास खड़े होने का साहस था।

आज के समय में, जब साहित्य और कला भी अक्सर बाजार और लोकप्रियता के दबाव में आ जाते हैं, यह प्रसंग और भी प्रासंगिक हो जाता है। एक सृजक का दायित्व केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि समाज को आईना दिखाना भी है। प्रेमचंद जानते थे कि गोर्की का लेखन केवल कथा नहीं, बल्कि चेतना है—ऐसी चेतना, जो श्रमिक को अपनी शक्ति का एहसास कराती है और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस देती है। यही चेतना प्रेमचंद के लेखन में भी दिखाई देती है। प्रेमचंद का गोर्की के प्रति यह सम्मान किसी औपचारिकता का परिणाम नहीं था। यह दो विचारधाराओं, दो संवेदनशील मनों और दो संघर्षशील लेखन परंपराओं का मिलन था। एक रूस की धरती से उठा, दूसरा भारत की मिट्टी से, पर दोनों की जड़ें उसी मानवीय पीड़ा में थीं, जो भाषा और सीमा नहीं पहचानती। इसलिए जब गोर्की गए, तो प्रेमचंद को लगा जैसे उनका अपना कोई चला गया हो।

यह घटना हमें यह भी सिखाती है कि सच्चा साहित्यकार केवल लिखता नहीं, बल्कि जीता भी है—विचारों को, मूल्यों को और प्रतिबद्धता को। बीमारी, गरीबी और व्यक्तिगत दुःख के बावजूद प्रेमचंद ने कभी अपने सरोकार नहीं बदले। गोर्की के लिए शोक-प्रस्ताव लिखते समय वे शायद यह भी जानते थे कि उनका अपना समय भी सीमित है, फिर भी उन्होंने अपनी ऊर्जा उस काम में लगाई, जिसे वे नैतिक रूप से आवश्यक मानते थे।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सृजक के सरोकार उसकी रचनाओं से कहीं आगे जाते हैं। वे उसके जीवन, उसके व्यवहार और उसकी प्रतिक्रियाओं में दिखाई देते हैं। प्रेमचंद द्वारा गोर्की के लिए लिखा गया शोक-प्रस्ताव केवल एक श्रद्धांजलि नहीं था, बल्कि यह घोषणा थी कि साहित्य की दुनिया में सच्चे रचनाकार एक-दूसरे के साथी होते हैं, चाहे वे किसी भी देश या भाषा के हों। यही भावना साहित्य को जीवित रखती है और उसे समय के पार ले जाती है।

समग्र रणनीति व जागरूकता से रुकेगा जल प्रदूषण

बीते कुछ दशकों में भूजल का अत्यधिक दोहन और निरंतर प्रदूषण एक गंभीर स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक संकट का रूप ले चुका है। आज यह जल की गुणवत्ता, जनस्वास्थ्य और भावी पीढ़ियों के जलाधिकार से सीधे जुड़ा हुआ मुद्दा बन चुका है।

केंद्रीय भूजल बोर्ड द्वारा जारी वार्षिक भूजल गुणवत्ता रिपोर्ट 2025 के अनुसार, देश के कई राज्यों के जिलों के भूजल में विभिन्न रासायनिक प्रदूषकों की मात्रा निर्धारित मानकों से अधिक पाई जा रही है। रिपोर्ट के अनुसार, इसमें लवणता, फ्लोराइड, यूरेनियम, नाइट्रेट, आयरन और आर्सेनिक जैसे तत्व निर्धारित सीमा से ऊपर दर्ज किए गए हैं। ये आंकड़े नागरिकों के स्वास्थ्य, जीवन-गुणवत्ता और भविष्य से जुड़े गंभीर संकेत हैं।

हरियाणा में सिंचाई के लिए 85 प्रतिशत से अधिक जल भूमिगत स्रोतों से प्राप्त किया जाता है। रिपोर्ट के अनुसार, हरियाणा के कई जिलों में फ्लोराइड, नाइट्रेट, आयरन और यूरेनियम जैसे प्रदूषकों की मात्रा सुरक्षित मानकों से अधिक पाई गई है। विशेष रूप से, फ्लोराइड की अधिकता राज्य के अनेक जिलों में दंत फ्लोरोसिस और अस्थि फ्लोरोसिस जैसी गंभीर बीमारियों की आशंका को बढ़ाती है। नाइट्रेट की अधिकता शिशुओं में 'ब्लू बेबी सिंड्रोम' जैसी जानलेवा स्थिति उत्पन्न कर सकती है, जबकि यूरेनियम और आर्सेनिक दीर्घकालिक रूप से गुर्दे, हड्डियों और तंत्रिका तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

कृषि क्षेत्र में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक और असंतुलित प्रयोग, औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्टों का अपर्याप्त उपचार, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सीवेज प्रबंधन की कमजोर व्यवस्था तथा वर्षाजल के प्राकृतिक पुनर्भरण मार्गों का अवरुद्ध होना, भूजल की गुणवत्ता को लगातार नुकसान पहुंचा रहे हैं। हाल के वर्षों में मध्य प्रदेश के भोपाल में दूषित पेयजल की घटनाएं यह दर्शाती हैं कि जल गुणवत्ता की अनदेखी गंभीर मानवीय त्रासदी में बदल सकती है। जांच में पाया गया कि दूषित पानी के सेवन से कई लोगों की असमय मृत्यु की घटनाएं सामने आईं। यह देश के लिए एक चेतावनी है कि जल गुणवत्ता को केवल तकनीकी या कागजी प्रक्रिया मानकर नहीं छोड़ा जा सकता। यह घटना दर्शाती है कि जल प्रदूषण का प्रभाव अचानक और घातक रूप में सामने आ सकता है। जब तक समस्या दिखाई देती है, तब तक बहुत नुकसान हो चुका होता है। यही कारण है कि भूजल प्रदूषण को अब भविष्य का नहीं, बल्कि वर्तमान का संकट मानकर उससे निपटना होगा।

सरकार द्वारा जल जीवन मिशन, अटल भूजल योजना और राष्ट्रीय जल गुणवत्ता कार्यक्रम जैसी योजनाओं के माध्यम से इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। आवश्यकता है कि इन योजनाओं को जल गुणवत्ता सुधार की समग्र रणनीति में बदला जाए। भूजल की नियमित और पारदर्शी निगरानी, प्रदूषण स्रोतों की वैज्ञानिक पहचान, स्थानीय स्तर पर जल उपचार संयंत्रों की स्थापना और वर्षाजल संचयन को प्रभावी रूप से लागू करना समय की मांग है।

हरियाणा के संदर्भ में जिला स्तर पर जल गुणवत्ता मानचित्रण, ग्राम पंचायतों को जल-गुणवत्ता आधारित स्वास्थ्य सूचकांकों से जोड़ना और विकेंद्रीकृत जल उपचार प्रणालियों को बढ़ावा देना आवश्यक है। जल एवं स्वच्छता सहायक संगठन जैसी संस्थाओं की भूमिका को और सशक्त कर सामुदायिक सहभागिता को मजबूत किया जा सकता है। जल रक्षक और जल प्रहरी जैसे स्थानीय स्वयंसेवकों की अवधारणा जल निगरानी और जागरूकता को जमीनी स्तर पर प्रभावी बना सकती है। वहीं यूरेनियम और आर्सेनिक जैसे तत्वों की भूगर्भीय उत्पत्ति, उनके प्रसार और स्वास्थ्य पर प्रभाव को समझने के लिए विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। हरियाणा के प्रत्येक जिले में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अंतर्गत जल गुणवत्ता परीक्षण की प्रयोगशालाएं पहले से कार्यरत हैं। इनकी क्षमता, नियमितता और जन-सुलभता को और सुदृढ़ किया जाए। जल परीक्षण सेवाओं को जन-जागरूकता, परामर्श और समयबद्ध सूचना प्रणाली से जोड़ा जाए, ताकि आम नागरिकों को गुणवत्ता की जानकारी मिल सके। इसके साथ ही प्रदूषित जल के विकल्प, उपचार उपाय और स्वास्थ्य संबंधी सावधानियों के बारे में मार्गदर्शन प्राप्त हो सके। इन प्रयोगशालाओं के आंकड़ों के आधार पर राज्य स्तर पर जल गुणवत्ता प्रवृत्ति विश्लेषण किया जाना चाहिए, जिससे नीतिगत निर्णय अधिक प्रभावी बन सकें। भूजल प्रदूषण को जनआंदोलन के माध्यम से ही स्थायी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। जब तक किसान उर्वरकों के संतुलित उपयोग को नहीं अपनाएंगे, उद्योग अपशिष्ट उपचार को गंभीरता से नहीं लेंगे, और नागरिक जल संरक्षण को अपनी दैनिक आदतों का हिस्सा नहीं बनाएंगे, तब तक यह समस्या बनी रहेगी। स्कूलों, पंचायतों, सामाजिक संगठनों और स्वयंसेवी संस्थाओं को जोड़कर जल गुणवत्ता पर आधारित व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाना समय की मांग है।

अभियान

जब हर श्वास बन जाए नारायण का स्मरण

भारतीय भक्ति परंपरा में ईश्वर कोई दूर बैठी सत्ता नहीं है, बल्कि वह हर श्वास, हर धड़कन और हर अनुभूति में समाया हुआ सत्य है। नारायण कवच इसी अनुभूति का विस्तृत रूप है, जहाँ भक्ति केवल जप या पाठ नहीं रह जाती, बल्कि साधक का सम्पूर्ण जीवन ही एक प्रार्थना बन जाता है। यह कवच शब्दों का समूह नहीं, बल्कि विश्वास, समर्पण और प्रेम से निर्मित वह दिव्य सुरक्षा है, जिसे संसार की कोई नकारात्मक शक्ति भेद नहीं सकती। जब मनुष्य स्वयं को नारायण के चरणों में रख देता है, तब भय, असुरक्षा और संशय स्वतः ही विलीन होने लगते हैं।

नारायण कवच का भाव अत्यंत सरल और गहन है। इसका मूल संदेश यह है कि जब हम स्वयं को पूर्ण रूप से परम सत्ता को सौंप देते हैं, तब वही सत्ता हमारी रक्षा का दायित्व ले लेती है। श्रीमद्भागवत पुराण में वर्णित यह कवच इंद्र और असुरों की कथा से कहीं आगे जाकर मानव जीवन के हर संघर्ष से संवाद करता है। इंद्र का भय, उनकी पराजय और फिर नारायण कवच के माध्यम से पुनः प्राप्त हुआ आत्मबल, यह सब प्रतीक है उस स्थिति का, जब मनुष्य बाहरी शक्तियों के भरोसे कमजोर पड़ जाता है और भीतर की ईश्वरीय शक्ति को भूल बैठता है। जैसे ही स्मरण लौटता है, वैसे ही शक्ति भी लौट आती है।

भक्ति का सबसे सुंदर स्वरूप तब प्रकट होता है, जब ईश्वर से कुछ माँगने की जगह केवल उनके होने का अनुभव किया जाए। नारायण कवच का पाठ करते समय साधक धीरे-धीरे इस अवस्था में पहुँचता है। मंत्रों की ध्वनि मन की तरंगों को शांत करती है, चित्त को स्थिर करती है और हृदय में एक अलौकिक भरोसा भर देती है। यह भरोसा तर्क से नहीं, अनुभव से जन्म लेता है। साधक को लगने लगता है कि वह अकेला नहीं है, कोई अदृश्य शक्ति हर पल उसके साथ चल रही है। नारायण कवच में भगवान विष्णु के विविध रूपों का स्मरण एक गहरी भक्ति-साधना है। प्रत्येक अवतार केवल एक कथा नहीं, बल्कि जीवन के किसी न किसी संघर्ष का समाधान है। जब भक्त मत्स्य का स्मरण करता है, तो उसे यह भाव मिलता है कि जीवन की गहराइयों में डूबने पर भी ईश्वर उसे बचा लेंगे। वराह का स्मरण उसे सिखाता है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही भारी क्यों न हों, ईश्वर उसे उठाकर सुरक्षित स्थान पर रख देंगे। नृसिंह का स्मरण भीतर छिपे भय और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस देता है। राम और कृष्ण का स्मरण जीवन को मर्यादा और प्रेम, दोनों से भर देता है। इस प्रकार नारायण कवच साधक के जीवन को सम्पूर्ण बनाता है।

भक्ति की यह यात्रा धीरे-धीरे साधक को निर्भय बनाती है। यहाँ निर्भयता का अर्थ यह नहीं कि संकट समाप्त हो जाते हैं, बल्कि यह कि संकटों का प्रभाव कम हो जाता है। साधक जान जाता है कि जो कुछ भी हो रहा है, वह नारायण की इच्छा से हो रहा है और वही इच्छा अंततः कल्याणकारी है। इस भाव से जीवन जीने वाला व्यक्ति दुख में भी टूटता नहीं और सुख में भी अहंकार से मुक्त रहता है। यही संतुलन भक्ति का वास्तविक फल है। आज का मनुष्य बाहरी सुरक्षा के अनेक साधन जुटा लेता है, पर भीतर से असुरक्षित बना रहता है। नारायण कवच उसे भीतर की सुरक्षा से जोड़ता है। जब मन शांत होता है, जब हृदय में ईश्वर का स्मरण होता है, तब बाहरी परिस्थितियाँ उतनी भयावह नहीं लगतीं। यह कवच मन को इतना दृढ़ बना देता है कि नकारात्मक विचार, ईर्ष्या, द्वेष और भय उसके निकट भी नहीं आ पाते। धीरे-धीरे साधक के चारों ओर एक ऐसा आध्यात्मिक वातावरण बन जाता है, जिसमें शांति स्वाभाविक हो जाती है।

मकर संक्रांति जैसे पावन काल में नारायण कवच का स्मरण भक्ति को और गहरा कर देता है। उत्तरायण का समय केवल सूर्य के मार्ग परिवर्तन का संकेत नहीं, बल्कि चेतना के जागरण का प्रतीक है। इस काल में किया गया जप और पाठ सीधे हृदय में उतरता है। साधक को ऐसा अनुभव होता है मानो नारायण स्वयं उसकी साधना को स्वीकार कर रहे हों। यह अनुभव शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, इसे केवल जिया जा सकता है।

नारायण कवच का भक्ति पक्ष यह भी सिखाता है कि ईश्वर की शरण में जाना कोई पलायन नहीं, बल्कि सबसे बड़ा साहस है। जब मनुष्य अपने सीमित बल को स्वीकार कर ईश्वर के अनंत बल पर भरोसा करता है, तभी वह वास्तव में शक्तिशाली बनता है। यह कवच साधक को यही स्मरण कराता है कि उसकी पहचान केवल शरीर या पद से नहीं, बल्कि उस दिव्य चेतना से है, जिसका वह अंश है। इस साधना का प्रभाव धीरे-धीरे साधक के व्यवहार में भी दिखने लगता है। वाणी में मधुरता, दृष्टि में करुणा और कर्म में शुद्धता आने लगती है। क्योंकि जब भीतर नारायण बसते हैं, तो बाहर हिंसा या कटुता कैसे रह सकती है। भक्ति यहाँ केवल व्यक्तिगत रक्षा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज और संसार के प्रति भी प्रेम का विस्तार बन जाती है।

अंततः नारायण कवच यह अनुभव कराता है कि सच्ची सुरक्षा बाहर नहीं, भीतर है। यह सुरक्षा विश्वास से बनती है, श्रद्धा से मजबूत होती है और प्रेम से अटूट हो जाती है। जब भक्त यह समझ लेता है, तब उसका जीवन स्वयं एक कवच बन जाता है—ऐसा कवच जिसे न समय तोड़ सकता है, न परिस्थिति, न कोई भय। हर श्वास में नारायण का स्मरण और हर क्षण उनकी उपस्थिति का अनुभव ही इस कवच की पूर्णता है। यही भक्ति का परम स्वरूप है, और यही नारायण कवच का वास्तविक सार।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल गांधीनगर के सुघड स्थित आनंद निकेतन स्कूल में 'परीक्षा पे चर्चा' के नौवें संस्करण में सहभागी हुए

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का प्रेरणात्मक संदेश बच्चों ने आत्मसात किया

▸▸ परीक्षा आपकी मेहनत का प्रतिबिंब है तथा तनाव को सफलता में बदलने का प्लेटफॉर्म है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ विद्यार्थी अभ्यास और पठन के टाइम टेबल की तरह मोबाइल टीवी देखने का भी समय तय करें : मुख्यमंत्री का बच्चों से अनुरोध

▸▸ डिप्रेशन में आए बिना जीवन में संतुलन बनाए रखते हुए किसी भी परिस्थिति का स्वस्थ मन से सामना करने की मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की बच्चों को सीख

(जीएनएस)। गांधीनगर, : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विद्यार्थियों में परीक्षा को लेकर मौजूद डर और असफलता का भय दूर करने की प्रेरणा देने वाला लोकप्रिय कार्यक्रम 'परीक्षा पे चर्चा' देशभर में शुरू करवाया है। प्रधानमंत्री पिछले 8 वर्षों से विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षाओं सहित वार्षिक परीक्षाओं से पहले इस उपक्रम में 'परीक्षा पे चर्चा' का गहन मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

इस वर्ष शुक्रवार को 'परीक्षा पे चर्चा' के नौवें संस्करण में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल गांधीनगर के सुघड स्थित आनंद निकेतन स्कूल के छात्रों के साथ सहभागी हुए।

इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के साथ शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युम्न वाजा, गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, विधायक श्री अल्पेशभाई ठाकोर, जिला पंचायत प्रमुख श्रीमती शिल्पाबेन पटेल, शहर भाजपा अध्यक्ष डॉ. आशीष दवे तथा कई पदाधिकारी भी शामिल हुए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कक्षा 10 एवं 12 की बोर्ड परीक्षा देने वाले बच्चों को सफलता की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि परीक्षा जीवन की कसौटी नहीं है, बल्कि हमारी मेहनत का प्रतिबिंब है और तनाव को सफलता में बदलने का प्लेटफॉर्म है।

उन्होंने डिप्रेशन में आए बिना जीवन का संतुलन बनाए रखते हुए किसी भी परिस्थिति में स्वस्थ मन से आगे बढ़ने के लिए विद्यार्थियों से अनुरोध किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वर्तमान समय में विद्यार्थियों में बढ़ रही मोबाइल फोन की लत पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जैसे बच्चे पढ़ाई, अध्ययन और खेल कूद का समय तथा टाइम टेबल तय करते हैं, वैसे ही मोबाइल देखने का भी निश्चित समय तय करें और छात्रों को सीख भी दी कि मोबाइल की आदत विकसित न करें।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'विकसित भारत 2047' के संकल्प में राष्ट्रहित

प्रथम का भाव हृदय में रखते हुए विद्यार्थियों को भावी नागरिक के रूप में अपना दायित्व निभाने का अनुरोध किया।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा परीक्षा के तनाव से बच्चों को मुक्त रखने के लिए शुरू किया गया 'परीक्षा पे चर्चा' का यह नूतन दृष्टिकोण अब बच्चों के लिए एक प्रेरणात्मक कार्यक्रम बन गया है।

मुख्यमंत्री ने गौरवपूर्वक उल्लेख किया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हर वर्ष परीक्षा से पहले बच्चों के बीच जाकर 'परीक्षा पे चर्चा' के अंतर्गत प्रत्यक्ष संवाद कर उन्हें बेहतर प्रदर्शन की प्रेरणा देने वाले संभवतः विश्व के एकमात्र नेता होंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'परीक्षा पे चर्चा-2026' के समारोह के अवसर पर शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युम्न वाजा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विद्यार्थियों में संस्कार, समझ और सदाचार; इन तीन 'S' का निर्माण हो, इसके लिए 'परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम' की शुरुआत की थी। विद्यार्थियों के कौशल को प्रोत्साहित करने के साथ प्रधानमंत्री से सीधे संवाद से विद्यार्थी चिंतामुक्त, दबाव से बाहर रहकर पढ़ाई को अपनाने लगे हैं।

शिक्षा मंत्री ने यह भी जोड़ा कि शिक्षा का अर्थ केवल परीक्षा नहीं है। शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती है, इसलिए परीक्षा अंतिम लक्ष्य नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को आत्मविश्वास के साथ तनाव मुक्त वातावरण में परीक्षा देनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने नैतिकता की स्थापना एवं चेतना के साथ विद्यार्थियों में सकारात्मक विचार उत्पन्न हों, इसके लिए 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम को माध्यम बनाया है। साथ ही उन्होंने अभिभावकों से बच्चों के साथ संवेदनशील व्यवहार करने और विद्यार्थियों से परीक्षा को आनंदपूर्वक एक अवसर के रूप में लेने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री मिलिंद तोरवणे, गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री एम. ए. पंड्या, कलेक्टर श्री मेहुल दवे, जिला विकास अधिकारी श्री बी. जे. पटेल, आनंद निकेतन स्कूल के ट्रस्टी श्री विवेकभाई पटेल तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी व शिक्षक उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे द्वारा तीन जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से बांद्रा टर्मिनस–भगत की कोठी, बांद्रा टर्मिनस–अजमेर तथा वलसाड–हिसार के बीच चल रही तीन जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरों को विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

1. ट्रेन संख्या 04828/04827 बांद्रा टर्मिनस – भगत की कोठी साप्ताहिक स्पेशल

ट्रेन संख्या 04828 बांद्रा टर्मिनस – भगत की कोठी साप्ताहिक स्पेशल

के फेरों को 29 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04827 भगत की कोठी – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल के फेरों को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

2. ट्रेन संख्या 09622/09621 बांद्रा टर्मिनस – अजमेर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन संख्या 09622 बांद्रा टर्मिनस – अजमेर साप्ताहिक स्पेशल के फेरों को 30 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09621 अजमेर – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल के फेरों को 29 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

3. ट्रेन संख्या 04728/04727 वलसाड – हिसार साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन संख्या 04728 वलसाड – हिसार साप्ताहिक स्पेशल के फेरों को 26 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04727 हिसार – वलसाड टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल के फेरों को 25 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 04828, 09622 एवं 04728 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 08.02.2026 से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर उपलब्ध होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना एवं समय-सारणी से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

अखिल भारतीय अंतर रेलवे सांस्कृतिक संगीत प्रतियोगिता में पश्चिम रेलवे ओवरऑल चैंपियन बना

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे ने एक बार फिर गौरव प्राप्त करते हुए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर में आयोजित अखिल भारतीय अंतर रेलवे सांस्कृतिक संगीत प्रतियोगिता में ओवरऑल चैंपियन ट्रॉफी अपने नाम की है। यह दो दिवसीय प्रतियोगिता 2 एवं 3 फरवरी 2026 को आयोजित की गई, जिसमें देश भर से आए प्रतिभाशाली रेलवे कर्मचारियों ने अपनी संगीतमय प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, भारतीय रेल के विभिन्न जोनों से आए कुल 147 प्रतिभागियों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस प्रतियोगिता में पश्चिम रेलवे सहित 14

जोनल रेलवे, रेलवे बोर्ड तथा 5 उत्पादन इकाइयों के कलाकारों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया, जिससे यह आयोजन एक भव्य सांस्कृतिक उत्सव में परिवर्तित हो गया।

इस अवसर पर प्रतिभागियों ने शास्त्रीय गायन, शास्त्रीय वाद्य, सुगम संगीत गायन एवं वादन सहित विभिन्न श्रेणियों में अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। मुख्यालय, चर्चगेट के श्री चैतन्य परब ने शास्त्रीय गायन श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, जबकि मुख्यालय, चर्चगेट की श्रीमती प्रेरणा बाजे ने सुगम संगीत गायन श्रेणी में तृतीय स्थान हासिल किया।

वाद्य संगीत श्रेणी में रतलाम मंडल के श्री दिनेश भंवरिया तथा मुख्यालय के श्री संतोष वाघमारे ने उत्कृष्ट प्रस्तुतियाँ दीं। उन्हें श्री कपिल देव, श्री आदित्य मालवीय एवं श्री दिनकर भगत का सशक्त सहयोग प्राप्त हुआ, जिनकी उल्लेखनीय संगत ने पश्चिम रेलवे की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के परिणामस्वरूप पश्चिम रेलवे ने ओवरऑल चैंपियन ट्रॉफी गर्व के साथ अपने नाम की, जो इसके कर्मचारियों में निहित समृद्ध सांस्कृतिक प्रतिभा को दर्शाता है।

अहमदाबाद मंडल का जनवरी 2026 में उत्कृष्ट प्रदर्शन - यात्री सुविधा, सुरक्षा एवं राजस्व वृद्धि के प्रति निरंतर प्रतिबद्ध

जनवरी 2026 में 800 करोड़ से अधिक का राजस्व अर्जित कर बनाया कीर्तिमान

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं बेहतर सेवाएँ प्रदान करने तथा राजस्व वृद्धि के प्रति निरंतर प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में जनवरी 2026 के दौरान मंडल ने यात्री एवं माल राजस्व, टिकट जांच, गैर-भाड़ा राजस्व तथा व्यवसाय विकास के क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

राजस्व एवं यात्री उपलब्धियाँ

अहमदाबाद मंडल ने जनवरी 2026 में कुल 806.86 करोड़ का राजस्व अर्जित किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 14.43% अधिक है।

▸▸ 150.57 करोड़ का यात्री राजस्व अर्जित किया गया, जो पिछले वर्ष से 8% अधिक है।

▸▸ 642.29 करोड़ का माल राजस्व प्राप्त हुआ, जो पिछले वर्ष से 18% अधिक है।

▸▸ जनवरी 2026 में 33.80 लाख यात्रियों को परिवहन सेवा प्रदान की गई, जो पिछले वर्ष से 9.28% अधिक है।

▸▸ टिकट जांच अभियानों से 2.25 करोड़ की आय अर्जित हुई, जो पिछले वर्ष से 26.40% अधिक है।

सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियाँ (Best Ever)

▸▸ कंटेनर कमोडिटी से 215.73 करोड़ का सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ मासिक माल राजस्व प्राप्त हुआ, जो दिसंबर 2025 के 211.45 करोड़ से अधिक है।

▸▸ IFFCO साइडिंग, खोडियार से 9.44 करोड़ का सर्वश्रेष्ठ मासिक राजस्व अर्जित हुआ, जो अक्टूबर 2025 के 9.21 करोड़ से अधिक है।

▸▸ LPG साइडिंग से 12.92 करोड़ का सर्वश्रेष्ठ राजस्व प्राप्त हुआ तथा LPG

कमोडिटी ने भी नया सर्वकालिक रिकॉर्ड बनाया, जो दिसंबर 2025 के 10.73 करोड़ से अधिक है।

▸▸ सामाखियाली फ्रेट टर्मिनल से 8.32 करोड़ का सर्वश्रेष्ठ मासिक राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ स्वच्छता अभियान के अंतर्गत 2,700 मामलों से 5.05 लाख की रिकॉर्ड जुर्माना वसूली की गई।

▸▸ 12.07 करोड़ का गैर-भाड़ा राजस्व अर्जित कर नया कीर्तिमान स्थापित किया गया।

▸▸ प्रतीक्षासूची यात्रियों की सुविधा हेतु 32 विशेष ट्रेन ट्रिप चलाई गईं, जिनसे 5.92 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।

पार्सल एवं लीजिंग

▸▸ ई-नीलामी के माध्यम से तीन पार्सल परिसंपत्तियों के लिए तीन वर्ष की लीज प्रदान कर 7.96 करोड़ का राजस्व सुनिश्चित किया गया।

▸▸ ओवरलोडिंग के प्रति शून्य सहनशीलता अपनाते हुए चार एसएलआर में आकस्मिक जांच की गई, जिसमें 15.21 क्विंटल अतिरिक्त वजन पाया गया। इसके लिए दंड सहित 29 लाख लीज भाड़ा वसूल कर रेलवे खाते में जमा कराया गया।

▸▸ पार्सल प्रबंधन में स्मार्ट ट्रैकिंग एवं पहचान प्रणाली लागू की गई।

गैर-भाड़ा राजस्व (NFR)

▸▸ वीडियो वॉल, डिजिटल लॉकर एवं विज्ञापन अनुबंधों से अतिरिक्त आय अर्जित की गई।

▸▸ पार्किंग मद में 3.11 करोड़ अर्जित कर वार्षिक लक्ष्य से 16.48% अधिक उपलब्धि प्राप्त की गई।

▸▸ विभिन्न परिचालन सेवाओं के अनुबंधों से भी राजस्व में वृद्धि दर्ज की गई।

टिकट जांच अभियान

▸▸ विशेष एवं फोर्ट्रेस जांच अभियानों के माध्यम से हजारों अनियमित यात्रियों के विरुद्ध कार्रवाई की गई।

▸▸ जनवरी 2026 में टिकट जांच आय लक्ष्य से 7.14% अधिक रही।

"मेरा टिकट मेरी शान" अभियान के माध्यम से वैध टिकट धारण के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा रही है।

VGRC 2026 साउथ गुजरात बनेगा भारत-EU FTA से खुलने जा रहे व्यापार अवसरों का बड़ा मंच

▸▸ भारत को मिलेगी यूरोपीय बाज़ारों में 97% टैरिफ लाइनों और 99.5% व्यापार मूल्य पर विशेष वरीयतापूर्ण पहुँच

▸▸ EU का USD 263.5 बिलियन का टेक्सटाइल मार्केट और USD 79.2 बिलियन का जेम्स एन्ड ज्वेलरी मार्केट सूरत के लिए बनेगा बड़ा अवसर

▸▸ VGRC 2026 साउथ गुजरात: टेक्सटाइल से केमिकल तक, EU में व्यापार अवसरों पर रहेगा विशेष फोकस

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारत और यूरोपीय संघ (EU) के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौता (FTA) भारत की सबसे रणनीतिक आर्थिक साझेदारियों में से एक के रूप में उभरा है। यह समझौता भारत के व्यापार, नवाचार और वैश्विक बाज़ारों में विश्वसनीय भागीदारी को नई गति देने वाला है। वर्तमान में EU को भारत का निर्यात लगभग INR 1.44 लाख करोड़ (USD 16.6 बिलियन) का है, जिसमें इस FTA के बाद इसमें उल्लेखनीय वृद्धि की संभावना जताई जा रही है।

भारत को मिलेगी यूरोपीय बाज़ारों में 97% टैरिफ लाइनों और 99.5% व्यापार मूल्य पर विशेष वरीयतापूर्ण पहुँच

भारत को यूरोपीय बाज़ारों में 97% टैरिफ लाइनों और 99.5% व्यापार मूल्य पर विशेष वरीयतापूर्ण पहुँच मिलेगी। 70.4% टैरिफ लाइनें, जो भारत के 90.7% निर्यात को कवर करती हैं, उनमें तुरंत शुल्क समाप्त कर दिया जाएगा। इनमें वस्त्र, चमड़ा, फुटवियर, चाय, कॉफी, मसाले, खेल सामग्री, खिलौने, रत्न-आभूषण, समुद्री उत्पाद, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, ऑटोमोबाइल, इस्पात, दवाइयाँ और रसायन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में गुजरात से EU को हुए कुल निर्यात में इन क्षेत्रों की हिस्सेदारी लगभग 25% रही है।

EU का USD 263.5 बिलियन का टेक्सटाइल मार्केट और USD 79.2 बिलियन का जेम्स & ज्वेलरी मार्केट सूरत के लिए बनेगा बड़ा अवसर

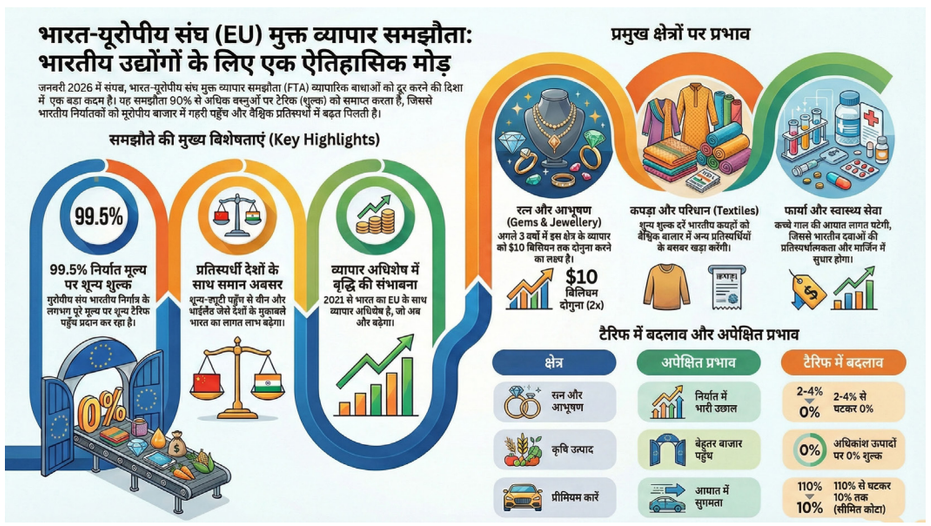

EU, वस्त्र और परिधान के क्षेत्र में भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात बाज़ार है। FTA लागू होने के बाद वस्त्र एवं कपड़ों पर 12% तक टैरिफ में कमी और सभी टैरिफ लाइनों पर शून्य शुल्क मिलने से EU के USD 263.5 बिलियन के आयात बाज़ार तक पहुँच आसान होगी। भारत का कुल वस्त्र एवं परिधान निर्यात USD 36.7 बिलियन है, जिसमें से USD 7.2 बिलियन EU को जाता है। EU को होने वाले निर्यात में रेडीमेड गारमेंट्स (60%), कॉटन टेक्सटाइल (17%) और MMF व सिंथेटिक टेक्सटाइल (12%) की प्रमुख हिस्सेदारी है। गुजरात का सूरत, जो MMF और सिंथेटिक वस्त्र उत्पादन का प्रमुख केंद्र है, इस नए अवसर से सबसे अधिक लाभ उठाने की स्थिति में है।

इसी तरह, रत्न एवं आभूषण क्षेत्र, खासकर MSME आधारित इकाइयाँ, EU बाज़ार में नई प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करने जा रही हैं। सूरत, जो विश्व के सबसे बड़े हीरा प्रसंस्करण केंद्रों में से एक है, 5,000 से अधिक इकाइयों का प्रमुख हब है। EU के USD 79.2 बिलियन के आयात बाज़ार तक विशेष पहुँच भारत के USD 2.7 बिलियन आभूषण निर्यात को नई गति दे सकती है। साथ ही, सूरत SEZ में 250 से अधिक इकाइयाँ आभूषण, हीरा और वस्त्र क्षेत्र में सक्रिय हैं, जो इन नए अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार हैं। भारत-EU के बीच FTA से गुजरात के वैल्यू-ऐडेड समुद्री खाद्य उत्पाद और केमिकल इन्डस्ट्री का भी होगा विस्तार

भारत-EU के बीच FTA लागू होने के बाद समुद्री निर्यात क्षेत्र भी बड़े सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे। वर्तमान में EU को भारत का समुद्री निर्यात USD 1 बिलियन है। FTA के बाद 26% तक टैरिफ में कमी और 100% व्यापार मूल्य कवरेज से भारतीय हितधारकों का EU के USD 53.6 बिलियन समुद्री आयात बाज़ार तक पहुँच आसान होगी। इसका सीधा लाभ गुजरात के वैल्यू-ऐडेड समुद्री खाद्य उत्पादों को मिलने की संभावना है।

इतना ही नहीं, भारत 2047 तक वैश्विक रसायन बाज़ार में 12% हिस्सेदारी और USD 1 ट्रिलियन केमिकल निर्माण केंद्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत- EU के बीच FTA के अंतर्गत भारत के 97.5% रसायन निर्यात पर शून्य शुल्क लागू होगा, जिससे 12.8% तक टैरिफ समाप्त होंगे। दक्षिण गुजरात, विशेषकर सूरत आर्थिक क्षेत्र, गुजरात के रसायन GVA में 70% योगदान देता है। दहेज, हजीरा, मुंद्रा और JNPT जैसे प्रमुख बंदरगाहों की निकटता इस क्षेत्र को निर्यात विस्तार के लिए विशेष रणनीतिक लाभ देती है। VGRC 2026 साउथ गुजरातः टेक्सटाइल से केमिकल तक, EU में व्यापार अवसरों पर रहेगा विशेष फोकस अप्रैल 2026 में सूरत में आयोजित होने वाला वाइब्रेन्ट गुजरात रीजनल समिट (VGRC) दक्षिण गुजरात उद्योगों के लिए FTA से खुले अवसरों को व्यवहारिक रूप देने का मंच बनेगा। वस्त्र, रत्न-आभूषण, रसायन-पेट्रोकेमिकल और समुद्री उत्पाद जैसे उच्च-विकास सेक्टर EU की बढ़ती मांग से सीधे जुड़ेंगे। 99.5% व्यापार मूल्य पर टैरिफ समाप्ति के साथ, यह सम्मेलन क्षेत्रीय उद्योगों को निर्यात वृद्धि की दिशा में ठोस और समयोचित कदम उठाने का अवसर प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल को पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने छारी-ढंढ को मिले वैश्विक 'रामसर साइट' दर्जे का प्रशस्ति पत्र अर्पित किया

गुजरात का पांचवां तथा कच्छ का पहला अंतरराष्ट्रीय महत्वपूर्ण वेटलैंड बना 'छारी-ढंढ'

(जीएनएस)। गांधीनगर : कच्छ के बन्नी का रत्न छारी-ढंढ को आधिकारिक रूप से 'रामसर साइट' घोषित किया गया है। छारी-ढंढ को मिले इस वैश्विक 'रामसर साइट' के दर्जे का प्रशस्ति पत्र शुक्रवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल को वन और पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने वन विभाग की ओर से अर्पित किया।

मुख्यमंत्री ने गुजरात की इस उपलब्धि के

लिए मंत्री सहित वन विभाग की पूरी टीम को बधाई दी।

उल्लेखनीय है कि छारी-ढंढ गुजरात का पांचवां और कच्छ का पहला अंतरराष्ट्रीय महत्वपूर्ण वेटलैंड बना है। गुजरात राज्य के लिए गर्व की बात है कि कच्छ जिले में स्थित 'छारी ढंढ पक्षी अभयारण्य' को अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले रामसर वेटलैंड्स की सूची में हाल ही में शामिल किया गया है। इसके साथ ही गुजरात में रामसर साइट्स की संख्या अब बढ़कर पांच हो गई है।

लाखाबावल एवं पीपली स्टेशनों पर कुछ ट्रेनों के ठहराव अस्थायी रूप से रद्द

(जीएनएस)। राजकोट मंडल के अंतर्गत लाखाबावल एवं पीपली रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए नए फुट ओवर ब्रिज (FOB) के निर्माण कार्य किया जा रहा है। इस निर्माण कार्य के कारण कुछ ट्रेनों के ठहराव (स्टॉपेज) को अस्थायी रूप से रद्द किया गया है। लाखाबावल स्टेशन पर यह व्यवस्था 25 फरवरी, 2026 तक तथा पीपली स्टेशन पर 25 मार्च, 2026 तक लागू रहेगी। संबंधित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है—

ट्रेन संख्या 19209/19210 भावनगर–ओखा–भावनगर एक्सप्रेस

तत्काल प्रभाव से 25.02.2026 तक लाखाबावल स्टेशन पर ठहराव अस्थायी रूप से रद्द।

ट्रेन संख्या 19210 ओखा–भावनगर एक्सप्रेस

तत्काल प्रभाव से 25.03.2026 तक पीपली स्टेशन पर ठहराव अस्थायी रूप से रद्द। रेल प्रशासन यात्रियों से अनुरोध करता है कि उपरोक्त अस्थायी फेरबदल को ध्यान में रखते हुए अपनी यात्रा की योजना बनाएं। ट्रेनों के परिचालन से संबंधित नवीनतम एवं अद्यतन जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन करें, ताकि किसी प्रकार की असुविधा से

पश्चिम रेलवे - रतलाम मंडल

No.EL-2025-26-44 **ई-टेण्डरिंग नोटिस** दिनांक: 03.02.2026

मण्डल रेल प्रबंधक (बिजली / पॉवर) शाखा) पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये "खुली निविदा" ई-निविदा के माध्यम से वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते है। विवरण इस प्रकार है-

क्र. सं.	ई-टेंडरिंग संख्या और कार्य का नाम	अनुमानित लागत रू	बयाना राशि रू	कार्य समापन अवधि
1	EL-2025-26-44	1,35,72,524.26	2,17,900/-	12 माह
	Ratlam Division - Electrical Work in connection with **(1)** Ujjain - provision of Ballast less track on PF no.1 (DN main), PF no. 3/4 (loop), PF no.5 (Loop) & PFno.6 (loop) line of Ujjain station. **(2)** Chittourgarh - provision of Ballast less track at PF Line no. 2 (DN ML), PF line no. 4 (Common Loop line) and PF no 5 (UP Loop line). **(3)** Ratlam provision of Ballast less track on PF No.4 (Common Loop line), PF No. 5 (Common Loop line) and PF No. 6 (Common Loop line) at Ratlam. **Similar type of work**: "Definition of Similar Nature of work: Wiring/ Re-wiring in buildings with associated electrical works like control gear and protection arrangements in residential buildings or service buildings. OR Lighting arrangement in buildings, circulating area, yard, street etc. with associated electrical works. OR wiring / Rewiring, Lighting arrangement in building with associated electrical works."			

वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि: 03.02.2026. निविदा खुलने की तिथि: 03.03.2026. विस्तृत निविदा सूचना, अहाता शर्ते एवं अन्य शर्ते वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदा फार्म की लागत शून्य है।

SPAN/7/1/448

हमें लाइक करें : facebook.com/WesternRly | हमें फॉलो करें : X.com/WesternRly

टोकन सिस्टम और सीसीटीवी की निगरानी में चल रहा था देह व्यापार, सूरत के पॉश इलाके में स्पा की आड़ में हाई-प्रोफाइल रैकेट का भंडाफोड़

(जीएनएस)। सूरत। गुजरात के सूरत शहर का पॉश इलाका पाल एक बार फिर शर्मनाक कारणों से सुर्खियों में आ गया है। यहां स्पा सेंटर की आड़ में बेहद सुनियोजित और कॉर्पोरेट शैली में चल रहे देह व्यापार के एक बड़े रैकेट का पुलिस ने पर्दाफाश किया है। इस कार्रवाई ने न केवल अवैध धंधे के तरीके उजागर किए हैं, बल्कि यह भी दिखाया है कि किस तरह आधुनिक तकनीक, प्रबंधन और सुरक्षा इंतजामों के जरिए अपराध को पूरी प्रोफेशनल योजना के साथ संचालित किया जा रहा था। पुलिस ने इस मामले में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है, जबकि चार महिलाओं को सुरक्षित मुक्त कराकर विमेंस शेल्टर होम भेजा गया है।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, उन्हें लंबे समय से पाल इलाके में स्थित 'राज वर्ल्ड शॉपिंग सेंटर' को लेकर संदिग्ध गतिविधियों की सूचनाएं मिल रही थीं। हाल ही में मिली एक पुख्ता गुप्त सूचना के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि शॉपिंग सेंटर के रूम नंबर 311 में '99 स्पा' के नाम से अनैतिक देह व्यापार का धंधा चलाया जा रहा है। इसके बाद पुलिस ने पूरी रणनीति के साथ एक विशेष टीम का गठन किया और ग्राहक बनकर पहले रेकी की गई। सभी पहलुओं की पुष्टि होने के बाद अचानक छापेमारी की गई, ताकि रैकेट के संचालकों को भागने का मौका न मिल सके।

जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो वहां का नजारा देखकर अधिकारी भी चौंक गए। स्पा सेंटर में सामान्य स्पा जैसी कोई गतिविधि नहीं थी, बल्कि पूरा सिस्टम किसी कॉर्पोरेट ऑफिस की तरह व्यवस्थित था। एंट्रेंस गेट पर

विशेष रूप से सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे, जिनका उद्देश्य पुलिस या किसी भी संदिग्ध व्यक्ति की आवाजाही पर लगातार नजर रखना था। बताया गया कि जैसे ही किसी सरकारी वाहन या पुलिसकर्मी की हलचल होती थी, अंदर मौजूद लोगों को तुरंत अलर्ट मिल जाता था। इसके अलावा, ग्राहकों के लिए एक टोकन सिस्टम लागू किया गया था, जिससे यह तय किया जाता था कि किस ग्राहक को किस महिला के पास भेजा जाएगा। पूरे लेन-देन, समय और ग्राहकों की जानकारी एक डायरी में दर्ज की जा रही थी, ताकि किसी भी स्थिति में हिसाब-किताब स्पष्ट रहे।

छापेमारी के दौरान पुलिस ने मौके से मैनेजर शुंवरो बाबूराव चक्रवर्ती और उसके असिस्टेंट विपिन उर्फ रिंकू जगदीश शाहू को गिरफ्तार किया। इनके अलावा स्पा में मौजूद तीन ग्राहकों—करण दीपक शाह, वीरसिंह शांतिजी कोली और उमेश दिलीप शर्मा—को भी रंगे हाथों पकड़ा गया। पूछताछ में यह सामने आया कि ये ग्राहक पहले भी यहां आ चुके थे और पूरा धंधा बेहद गोपनीय तरीके से चलाया जाता था। स्पा का मुख्य मालिक आकाश अंकुश धनावड़े छापेमारी के समय फरार पाया गया, जिसे पुलिस ने वॉन्टेड घोषित कर दिया है और उसकी तलाश के लिए अलग-अलग टीमें बनाई गई हैं।

तलाशी के दौरान पुलिस ने बड़ी मात्रा में आपत्तिजनक सामग्री बरामद की। इसमें देह व्यापार में इस्तेमाल होने वाले सात मोबाइल फोन, ग्राहकों के ग्यारह मोबाइल फोन, 63 हजार रुपये नकद, टोकन और पूरा लेखा-जोखा रखने वाली डायरी शामिल है। पुलिस का मानना है कि यह सिर्फ एक स्पा सेंटर का मामला नहीं है, बल्कि इसके तार अन्य शहरों और राज्यों से भी जुड़े हो सकते हैं। जब्त की गई डायरी और मोबाइल फोन के जरिए कॉल डिटेल्स, मैसेज और लेन-देन की जांच की जा रही है।

इस कार्रवाई में पुलिस ने चार महिलाओं को रेस्क्यू किया है, जिनमें से तीन पश्चिम बंगाल की रहने वाली हैं और एक महिला कोलकाता की है। शुरुआती जांच में पता चला है कि इन महिलाओं को बेहतर कमाई और काम के झूठे वादे दिखाकर सूरत लाया गया था। पुलिस अब यह जानने की कोशिश कर रही है कि इन्हें यहां लाने में कौन-कौन लोग शामिल थे, क्या यह कोई अंतरराज्यीय गिरोह है और क्या इन महिलाओं पर किसी तरह का दबाव या मजबूरी बनाई गई थी। फिलहाल सभी महिलाओं को सुरक्षित रूप से विमेंस शेल्टर होम भेज दिया गया है, जहां उनकी काउंसलिंग और कानूनी सहायता की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि यह मामला बेहद गंभीर है और इसमें संगठित अपराध के सभी तत्व मौजूद हैं। फरार मालिक की गिरफ्तारी के बाद कई और बड़े खुलासे होने की संभावना है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि इस तरह के स्पा सेंटर शहर के अन्य इलाकों में भी तो संचालित नहीं हो रहे हैं। इस पूरे मामले ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि बड़े शहरों के पॉश इलाकों में किस तरह अपराधी आधुनिक तकनीक और कॉर्पोरेट मॉडल का इस्तेमाल कर समाज के सबसे संवेदनशील मुद्दों को व्यापार में बदल रहे हैं। पुलिस ने साफ किया है कि इस रैकेट से जुड़े किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा और कानून के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी।

रेपो रेट यथावत, आम लोगों को राहतः ईएमआई नहीं बढ़ेगी, ब्याज दर 5.25 फीसदी पर कायम

(जीएनएस)। मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक ने आम लोगों, उद्योग और बाजार को बड़ी राहत देते हुए रेपो रेट में किसी तरह का बदलाव नहीं किया है। रेपो रेट को 5.25 प्रतिशत पर बरकरार रखा गया है, जिससे साफ है कि फिलहाल होम लोन, कार लोन और पर्सनल लोन महंगे नहीं होंगे और मौजूदा ईएमआई पर कोई अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा। गुरुवार को आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने मॉनीटरी पॉलिसी कमेटी की बैठक के बाद फैसलों की जानकारी देते हुए कहा कि मौजूदा आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए ब्याज दरों को स्थिर रखना उचित समझा गया है। आरबीआई जिस दर पर बैंकों को कर्ज देता है, उसे रेपो रेट कहा जाता है। जब यह दर घटती है तो बैंकों को सस्ता कर्ज मिलता है और उसका फायदा ग्राहकों को कम ब्याज दर के रूप में मिलता है, जबकि दर बढ़ने पर लोन महंगे हो जाते हैं। इस बार दरों में कोई बदलाव न होने से यह स्पष्ट संकेत मिला है कि केंद्रीय बैंक फिलहाल संतुलित नीति पर चलना चाहता है, ताकि विकास की रफ्तार और महंगाई—दोनों पर नियंत्रण बना रहे।

गौरतलब है कि वर्ष 2025 में रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों में आक्रामक नरमी

दिखाई थी। फरवरी 2025 में लगभग पांच साल बाद पहली बार रेपो रेट में कटौती की गई थी, जब इसे 6.5 प्रतिशत से घटाकर 6.25 प्रतिशत किया गया। इसके बाद अप्रैल की बैठक में 0.25 प्रतिशत की और कटौती की गई। जून में तीसरी बार बड़ा कदम उठाते हुए 0.50 प्रतिशत की कटौती की गई, जिससे बाजार को साफ संकेत मिला कि आरबीआई विकास को गति देना चाहता है। दिसंबर में 0.25 प्रतिशत की चौथी कटौती के बाद रेपो रेट 5.25 प्रतिशत पर आ गया था। इस तरह पूरे वर्ष में चार चरणों में कुल 1.25 प्रतिशत की कटौती की गई थी। मौजूदा बैठक में दरों को स्थिर रखना उसी नीति की निरंतरता माना जा रहा है।

बैठक में सिर्फ ब्याज दरों पर ही नहीं, बल्कि डिजिटल लेनदेन से जुड़े बढ़ते फ्रॉड के मामलों पर भी गंभीर चर्चा हुई। आरबीआई गवर्नर ने बताया कि छोटे अमाउंट वाले धोखाधड़ी के मामलों में ग्राहकों को राहत देने के लिए एक नया फ्रेमवर्क लाने का प्रस्ताव है। इसके तहत ऐसे मामलों में पीड़ित ग्राहकों को 25 हजार रुपये तक का मुआवजा मिल सकता है। गवर्नर ने कहा कि हाल के समय में डिजिटल भुगतान के दायरे के बढ़ने के साथ-साथ फ्रॉड के मामले भी सामने आए हैं, जिन्हें रोकने के लिए रिजर्व बैंक लगातार कदम उठा रहा है। इसी दिशा में डिजिटल पेमेंट की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए एक डिस्कशन पेपर भी जारी किया जाएगा, जिसमें क्रेडिट लिमिट की लेयरिंग, अतिरिक्त सुरक्षा उपाय और बुजुर्गों जैसे संवेदनशील यूजर्स के लिए विशेष ऑथेंटिकेशन सिस्टम पर सुझाव शामिल होंगे।

महंगाई के मोर्चे पर आरबीआई ने संकेत दिया है कि स्थिति फिलहाल नियंत्रण में है, हालांकि सतर्कता जरूरी बनी हुई है। गवर्नर संजय मल्होत्रा ने वित्त वर्ष 2026 के लिए खुदरा महंगाई दर के अनुमान को थोड़ा बढ़ाते हुए 2 प्रतिशत से 2.1 प्रतिशत कर दिया है। उन्होंने कहा कि खाद्य कीमतों और वैश्विक कारकों पर लगातार नजर रखी जा रही है, ताकि जरूरत पड़ने पर समय पर कदम उठाए जा सकें।

कुल मिलाकर आरबीआई के इस फैसले को संतुलन साधने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। एक तरफ जहां ब्याज दरों को स्थिर रखकर आम लोगों और कारोबारियों को राहत दी गई है, वहीं दूसरी ओर डिजिटल सुरक्षा और महंगाई जैसे मुद्दों पर सख्त निगरानी का संकेत भी दिया गया है। इससे यह साफ हो गया है कि आने वाले समय में केंद्रीय बैंक की नीति विकास के साथ-साथ वित्तीय स्थिरता पर केंद्रित रहेगी।

वैशाली में पुलिस एनकाउंटर का अंतः कुख्यात शूटर प्रिंस ढेर, अपराध की एक लंबी दास्तान पर लगा विराम

(जीएनएस)। वैशाली। बिहार के वैशाली जिले में पुलिस और अपराधियों के बीच चली मुठभेड़ में कुख्यात शूटर प्रिंस उर्फ अभिषेक मारा गया। दो लाख रुपये के इनामी इस अपराधी का नाम राज्य के सबसे खतरनाक बदमाशों में शुमार था। पुलिस के अनुसार, प्रिंस पर हत्या, लूट, रंगदारी और हथियारों के अवैध इस्तेमाल सहित कुल 28 संगीन आपराधिक मामले दर्ज थे। हाजीपुर कोर्ट परिसर में एक पुलिस जवान की हत्या से लेकर चर्चित 300 किलो सोना लूट कांड तक, उसके अपराधों की फेहरिस्त लंबी और खौफनाक रही है। उसके एनकाउंटर में मारे जाने को पुलिस और प्रशासन ने बड़ी सफलता माना है। प्रिंस को कुख्यात अपराधी सुबोध सिंह का शार्प शूटर माना जाता था और वह लंबे समय से पुलिस की आंखों में धूल झोंकता आ रहा था। वैशाली जिले के गोरौल थाना क्षेत्र के हसना गांव का रहने वाला प्रिंस कम उम्र में ही अपराध की दुनिया में उतर गया था। देखते ही देखते वह पेशेवर शूटर बन गया और बड़े गिरोहों के लिए सुपारी किलिंग और लूट जैसी वारदातों को अंजाम देने लगा। उसकी बढ़ती आपराधिक गतिविधियों को देखते हुए सरकार ने उसके सिर पर दो लाख रुपये का इनाम घोषित किया था।

कुछ समय पहले पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर बेऊर जेल भेजा था। बीमारी का

हवाला देकर उसे इलाज के लिए पटना के पीएमसीएच में भर्ती कराया गया, लेकिन वहीं से वह पुलिस अभिरक्षा को चकमा देकर फरार हो गया। इस घटना ने पुलिस महकमे में हड़कंप मचा दिया था और तभी से उसकी गिरफ्तारी को लेकर विशेष टीमें लगातार दबिश दे रही थीं। पुलिस के लिए यह चुनौती का विषय बन गया था कि एक कुख्यात अपराधी, जो पहले से जेल में बंद था, वह सरकारी अस्पताल से कैसे फरार हो गया।

लगातार मिल रही खुफिया सूचनाओं के आधार पर पुलिस उसकी गतिविधियों पर नजर बनाए हुए थी। इसी क्रम में सूचना मिली कि प्रिंस वैशाली जिले में ही एक मकान में छिपा हुआ है। जानकारी मिलते ही पुलिस ने विशेष टीम का गठन किया और पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी गई। जब पुलिस टीम संदिग्ध मकान के पास पहुंची और उसे आत्मसमर्पण करने को कहा, तभी प्रिंस ने पुलिस पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। अचानक हुई इस गोलीबारी से इलाके में अफरातफरी मच गई। पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई की। दोनों ओर से कुछ देर तक गोलियां चलीं, जिसमें प्रिंस गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तुरंत सदर अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। एनकाउंटर के दौरान उसके साथ मौजूद एक अन्य युवक भी गोली लगने से घायल हो गया, जिसे पुलिस ने मौके से ही गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से हथियार भी बरामद किए गए हैं और उसके खिलाफ अलग से मामला दर्ज कर आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

वैशाली के पुलिस कप्तान विक्रम सिहाग ने बताया कि एनकाउंटर पूरी तरह आत्मरक्षा में किया गया। उन्होंने कहा कि पुलिस टीम पर सीधे फायरिंग की गई थी, जिसके बाद मजबूरी में जवाबी कार्रवाई करनी पड़ी। मौके से जिस पिस्टल से फायरिंग की गई थी, उसे जब्त कर लिया गया है और पूरे घटनाक्रम की जांच की जा रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इस कार्रवाई से वैशाली और आसपास के जिलों में सक्रिय अपराधियों के नेटवर्क को बड़ा झटका लगा है।

प्रिंस के मारे जाने की खबर फैलते ही इलाके में चर्चा का माहौल बन गया। स्थानीय लोगों का कहना है कि उसका नाम सुनते ही लोग डर जाते थे। कई व्यापारी और आम नागरिक उसकी दहशत में रहते थे। पुलिस का मानना है कि उसके खात्मे से न सिर्फ पुराने मामलों की जांच में सहूलियत मिलेगी, बल्कि अपराध पर लगाम लगाने में भी मदद मिलेगी।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, प्रिंस कई बड़े अपराधियों के संपर्क में था और बिहार के अलावा दूसरे राज्यों में भी उसके नेटवर्क के तार जुड़े हुए थे। अब पुलिस उसके मोबाइल फोन, कॉल डिटेल और संपर्कों की जांच कर रही है, ताकि उसके गिरोह से जुड़े अन्य अपराधियों तक पहुंचा जा सके। माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में इस नेटवर्क से जुड़े और भी लोगों पर शिकंजा कस सकता है।

कुल मिलाकर, वैशाली में हुए इस एनकाउंटर को बिहार पुलिस की बड़ी कामयाबी माना जा रहा है। एक ऐसा अपराधी, जिसने कानून को लंबे समय तक चुनौती दी, आखिरकार अपने ही हथियारों के साथ मुठभेड़ में ढेर हो गया। पुलिस का दावा है कि इस कार्रवाई से इलाके में कानून-व्यवस्था और मजबूत होगी और आम लोगों में सुरक्षा का भरोसा बढ़ेगा।

डांगरवा स्टेशन यार्ड में इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे अहमदाबाद मण्डल के महेसाणा-जगुदन स्टेशनों के बीच ब्रिज नं. 972 एवं डांगरवा स्टेशन यार्ड में ब्रिज नं 1013 के पुनर्निमाण के संबंध में इंजीनियरिंग कार्य हेतु 08.02.2026 को ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। जो निम्नानुसार हैः-

आंशिक रद्द ट्रेनः

दिनांक 08.02.2026 की ट्रेन संख्या 20959/20960 वलसाड-वडनगर-वलसाड एक्सप्रेस गांधीनगर कैपिटल-वडनगर के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

मार्ग परिवर्तित ट्रेनें

दिनांक 07.02.2026 की 19032 योगनगरी ऋषिकेश-साबरमती एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-आंबलियासन-कलोल के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-कटोसण रोड-कलोल के रास्ते चलेगी।

दिनांक 07.02.2026 की 19412 दौलतपुर चौक-साबरमती एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-आंबलियासन-कलोल के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-कटोसण रोड-कलोल के रास्ते चलेगी।

रेल यात्रियों से निवेदन है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा प्रारम्भ करें। यात्री ट्रेनों के परिचालन संबंधित नवीनतम अपडेटस की जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते है।

भारत में आयरलैंड के राजदूत श्री केविन केली ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की

▸▸ एयरक्राफ्ट लीजिंग, सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम, फाइनेंशियल सर्विसेज और शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर हुई चर्चा

▸▸ मुख्यमंत्री ने वाइब्रेंट समिट में सहभागी होने का दिया आमंत्रण

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शुक्रवार को गांधीनगर में भारत में आयरलैंड के राजदूत श्री केविन केली ने शिष्टाचार मुलाकात की। गुजरात की अपनी इस पहली यात्रा में उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ बैठक में भारत और आयरलैंड के बीच ऐतिहासिक समानताओं पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गुजरात और आयरलैंड, दोनों सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हैं और सांस्कृतिक विरासत को महत्व देते हैं। उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया कि डबलिन में भारतीय दूतावास द्वारा दो वर्ष पहले आयोजित स्टेट कल्चरल इवेंट सीरिज में गुजरात पर फोकस किया गया था।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बैठक में गुजरात और आयरलैंड के बीच परस्पर हित के क्षेत्रों के रूप में एयरक्राफ्ट लीजिंग, सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम, फाइनेंशियल सर्विसेज और शिक्षा

में सहयोग को लेकर चर्चा-परामर्श किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से शुरू हुई वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में आयरलैंड के शिष्टमंडल को सहभागी होने का आमंत्रण भी दिया, जिसे आयरलैंड के राजदूत ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस शिष्टाचार मुलाकात बैठक में उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप भी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल देश की सर्वप्रथम प्रकृति प्रेम भागवत कथा-ज्ञान यज्ञ महोत्सव में शामिल हुए

ग्रीन सिटी गांधीनगर में चल रही भागवत कथा के छठे दिन मुख्यमंत्री ने कथा श्रवण किया और व्यासपीठे की आरती उतारी

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल शुक्रवार को गांधीनगर में आयोजित देश की सर्वप्रथम प्रकृति प्रेम भागवत कथा-ज्ञान यज्ञ महोत्सव में शामिल हुए।यह प्रकृति प्रेम भागवत कथा उत्सव गांधीनगर में पर्यावरण जागरूकता के लिए सेवारत नेचर फर्स्ट फाउंडेशन और सभी प्रकृति प्रेमियों के सहयोग से रविवार, 1 फरवरी से 7 फरवरी, 2026 तक आयोजित हो रहा है। कथा के छठे दिन मुख्यमंत्री ने कथा श्रवण कर व्यासपीठ की आरती भी उतारी। इस कथा के मुख्य वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार पूज्य भाईश्री रमेशभाई ओझा व्यासपीठ से भागवत कथा का अमृतपान

करा रहे हैं। भावी पीढ़ी को प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध सुरक्षित करने तथा जनमानस में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने के मुख्य उद्देश्य से शुरू हुई यह कथा बिना किसी मंडप या पंडाल के, पूरी तरह से प्रकृति के सान्निध्य में और घने छायादार पेड़ों के बीच सेक्टर-6 में आयोजित हो रही है।

ब्रह्मांड के पंचतत्व और जीव सृष्टि की माता यानी प्रकृति माता के संरक्षण और संवर्धन के उम्दा उद्देश्य के साथ राजधानी गांधीनगर में इस प्रकृति प्रेम कथा के जरिए एक अभिनव प्रयोग किया गया है। इस अवसर पर नेचर फर्स्ट ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी और कथा के प्रायोजक श्री नारणभाई पटेल तथा पूर्व मंत्री श्री महेन्द्रभाई त्रिवेदी, पद्मश्री जगदीशभाई त्रिवेदी, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री गौरांगभाई व्यास, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री आशीषभाई दवे, पूर्व महापौर श्री हितेशभाई मकवाणा सहित विशाल संख्या में भक्त उपस्थित रहे।

सोना वायदा में 816 रुपये की वृद्धिः चांदी वायदा में 4296 रुपये की नरमीः क्रूड ऑयल वायदा 14 रुपये बढ़ा

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 117745.67 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 29352.97 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 88387.16 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 37672 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3079.22 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 24712.08 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 149396 रुपये के भाव पर खूलकर, 154083 रुपये के दिन के उच्च और 149396 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 152071 रुपये के पिछले बंद के सामने 816 रुपये या 0.54 फीसदी की मजबूती के साथ 152887 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 418 रुपये या 0.33 फीसदी बढ़कर 125930 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 72 रुपये या 0.46 फीसदी बढ़कर 15710 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। सोना-मिनी मार्च वायदा 148889 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 152450 रुपये और नीचे में 148000 रुपये पर पहुंचकर, 940 रुपये या 0.63 फीसदी बढ़कर 151256 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम 152401 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 156250 रुपये और नीचे में 151532 रुपये पर पहुंचकर, 153847 रुपये के पिछले बंद के सामने 1264 रुपये या 0.82 फीसदी बढ़कर 155111 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 234063 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 243277 रुपये और नीचे में 229187 रुपये पर पहुंचकर, 243815 रुपये के पिछले बंद के सामने 4296 रुपये या 1.76 फीसदी घटकर 239519 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 5389 रुपये या 2.14 फीसदी लुढ़ककर 246582 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा

कमोडिटी वायदाओं में 29352.97 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 88387.16 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 24712.08 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 37672 पॉइंट के स्तर पर

5157 रुपये या 2.05 फीसदी औंधकर 246688 रुपये प्रति किलो पर आ गया। मेटल वर्ग में 2876.81 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 80 पैसे या 0.07 फीसदी बढ़कर 1228.8 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 1.8 रुपये या 0.56 फीसदी बढ़कर 322.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 2.75 रुपये या 0.89 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 310.05 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 70 पैसे या 0.37 फीसदी घटकर 188.95 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1614.87 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5738 रुपये के भाव पर खूलकर, 5867 रुपये के दिन के उच्च और 5731 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 14 रुपये या 0.24 फीसदी की बढ़त के साथ 5760 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 17 रुपये या 0.3 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 5764 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा 316.8 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 320.2 रुपये और नीचे में 312.6 रुपये पर पहुंचकर, 317.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 1.9 रुपये या 0.6 फीसदी बढ़कर 319.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 2.1 रुपये या 0.66 फीसदी बढ़कर 319.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 983.7 रुपये पर खूलकर, 3 रुपये या 0.31 फीसदी गिरकर 980.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13572.21 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 11139.87 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2421.84 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 195.82 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 22.31 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 236.83 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 763.69 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 838.80 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9444 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 61993 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 31632 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 417754 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 52180 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8865 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 21126 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 62614 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17223 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 14554 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा 36702 पॉइंट पर खूलकर, 37672 के उच्च और 36700 के नीचले स्तर को छूकर, 199 पॉइंट बढ़कर 37672 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 19.4 रुपये की बढ़त के साथ 234.3 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.8 रुपये की बढ़त के साथ 30 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 244 रुपये की गिरावट के साथ 9667 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 440000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 102.5 रुपये की गिरावट के साथ 1850 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 4.91 रुपये की गिरावट के साथ 28 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 14.2 रुपये की बढ़त के साथ 221 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 55 पैसे के सुधार के साथ 20 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 1013.5 रुपये की गिरावट के साथ 6600 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 350.5 रुपये की बढ़त के साथ 2231 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.02 रुपये की गिरावट के साथ 37.28 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.17 रुपये की गिरावट के साथ 0.49 रुपये हुआ।